International Journal of
Global Multidisciplinary Research and Analytics

IJGMRA | ISSN (Online): 3107-6483
October-December 2025 | Vol. 01 | Issue 3

Website: www.thearyapublication.com

भारतीय शिक्षा-दृष्टि और कृत्रिम बुद्धिमत्ता : नैतिक एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य

प्रोफेसर गोपाल कृष्ण ठाकुर*

*अधिष्ठाता, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत
ईमेल: gkthakur11@gmail.com

DOI: doi.org10.5281/zenodo.21212272
Published on: 30/12/2025

सारांश:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) के तीव्र विकास ने शिक्षा के स्वरूप, ज्ञानार्जन की प्रक्रियाओं तथा शिक्षण-अधिगम की पारम्परिक अवधारणाओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। विशेषतः जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उद्भव ने सूचना की उपलब्धता, वैयक्तिक अधिगम, शैक्षणिक लेखन तथा ज्ञान-सृजन की संभावनाओं का विस्तार किया है, किन्तु इसके साथ ही शिक्षा के उद्देश्य, शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, नैतिक निर्णय, बौद्धिक स्वायत्तता तथा मानवीय उत्तरदायित्व से जुड़े अनेक प्रश्न भी उभरकर सामने आए हैं। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भारतीय शिक्षा-दृष्टि की प्रासंगिकता का दार्शनिक एवं समालोचनात्मक विश्लेषण करना है। यह गुणात्मक, दार्शनिक तथा व्याख्यात्मक प्रकृति का है, जिसके सृजन में दस्तावेज़ीय विश्लेषण तथा वैचारिक विश्लेषण की पद्धतियों का उपयोग किया गया है। भारतीय दार्शनिक एवं शैक्षिक परम्परा से संबंधित मूल ग्रन्थों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता, AI Ethics और समकालीन शिक्षा-विमर्श से संबंधित प्रमुख अकादमिक साहित्य के आलोचनात्मक अध्ययन के आधार पर इस आलेख में यह प्रतिपादित किया गया है कि भारतीय शिक्षा-दृष्टि शिक्षा को केवल सूचना या कौशल के अर्जन की प्रक्रिया नहीं मानती, बल्कि प्रज्ञा, विवेक, चरित्र, आत्मानुशासन और लोकमंगल के विकास का माध्यम मानती है। आलेख में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा की प्रक्रियाओं, संसाधनों और दक्षता को समृद्ध कर सकती है, किन्तु शिक्षा के मूल उद्देश्यों का निर्धारण नहीं कर सकती। सूचना और ज्ञान, ज्ञान और प्रज्ञा, बुद्धि और विवेक, कौशल और चरित्र तथा स्वचालन और आत्मानुशासन जैसे वैचारिक द्वंद्वों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि AI-सक्षम शिक्षा की सफलता केवल तकनीकी नवाचार पर नहीं, बल्कि उसके मानवीय और नैतिक संचालन पर निर्भर करती है। इसका निष्कर्ष यह है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय शिक्षा-

दृष्टि परस्पर विरोधी नहीं हैं; बल्कि उत्तरदायी, मानवीय और मूल्यपरक शिक्षा के निर्माण के लिए दोनों के मध्य संतुलित संवाद और समन्वय आवश्यक है।

प्रमुख शब्दः *भारतीय शिक्षा-दृष्टि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, विवेक, चरित्र-निर्माण, नैतिक शिक्षा।*

प्रस्तावनाः

इक्कीसवीं शताब्दी का तीसरा दशक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) के तीव्र विस्तार का युग माना जा रहा है। विशेषतः जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Generative Artificial Intelligence) के विकास ने ज्ञान के सृजन, अधिगम, संचार तथा निर्णय-निर्माण की प्रक्रियाओं को अभूतपूर्व रूप से प्रभावित किया है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल तकनीकी नवाचार का उपकरण नहीं रह गई है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, मीडिया तथा वैज्ञानिक अनुसंधान सहित लगभग प्रत्येक क्षेत्र की कार्यप्रणाली को पुनर्परिभाषित कर रही है (रसेल एवं नॉरविग, 2021; यूनेस्को, 2021)। विशेष रूप से उच्च शिक्षा में जनरेटिव AI के प्रवेश ने शिक्षण-अधिगम, मूल्यांकन, शैक्षणिक लेखन, अनुसंधान तथा ज्ञानार्जन की पारम्परिक अवधारणाओं के समक्ष अनेक नए अवसरों के साथ-साथ गंभीर नैतिक और शैक्षिक प्रश्न भी उपस्थित किए हैं।

इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप शिक्षा का स्वरूप तीव्र गति से बदल रहा है। वैयक्तिकृत अधिगम (Personalized Learning), अनुकूलित अधिगम (Adaptive Learning), अधिगम विश्लेषिकी (Learning Analytics), स्वचालित मूल्यांकन तथा बुद्धिमत्तायुक्त अधिगम-मार्गदर्शन प्रणालियाँ (Intelligent Tutoring Systems) शिक्षण प्रक्रिया का अंग बनती जा रही हैं। इन नवाचारों ने शिक्षा की पहुँच, दक्षता तथा संसाधनों की उपलब्धता में उल्लेखनीय वृद्धि की है, किन्तु साथ ही उन्होंने ज्ञान की प्रामाणिकता, शैक्षणिक ईमानदारी, बौद्धिक स्वायत्तता, मानवीय निर्णय, डेटा-गोपनीयता तथा शिक्षक की भूमिका से संबंधित जटिल प्रश्न भी उत्पन्न किए हैं (बेंडर इत्यादि, 2021; क्रॉफर्ड, 2021)। परिणामस्वरूप आज यह बहस केवल इस प्रश्न तक सीमित नहीं रह गई है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा में किस प्रकार प्रयुक्त की जाए, बल्कि इस प्रश्न तक पहुँच गई है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या होना चाहिए।

समकालीन वैश्विक विमर्श में AI-सक्षम शिक्षा का मूल्यांकन प्रायः तकनीकी दक्षता, अधिगम-परिणाम, वैयक्तिक अनुकूलन तथा उत्पादकता की कसौटियों पर किया जाता है। निस्संदेह ये सभी आयाम महत्त्वपूर्ण हैं, किन्तु शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना-संप्रेषण अथवा कौशल-विकास तक सीमित नहीं है। शिक्षा मनुष्य के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया भी है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता सूचना के अर्जन को सरल बना देती है, तो भी यह प्रश्न बना रहता है कि क्या वह विवेक, प्रज्ञा, नैतिक निर्णय, चरित्र तथा उत्तरदायित्व का भी विकास कर सकती है? यही वह बिंदु है जहाँ समकालीन शिक्षा-विमर्श और भारतीय शिक्षा-दृष्टि के मध्य सार्थक संवाद की आवश्यकता अनुभव होती है।

भारतीय शिक्षा-दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य सदैव मनुष्य का समग्र विकास माना गया है। यहाँ शिक्षा का संबंध केवल ज्ञानार्जन से नहीं, बल्कि आत्मबोध, विवेक, प्रज्ञा, चरित्र, आत्मानुशासन और लोकमंगल से भी है। उपनिषदों में विद्या को आत्मज्ञान की ओर अग्रसर करने वाला साधन माना गया है; भगवद्गीता में ज्ञान का मूल्य उसके नैतिक और लोकहितकारी प्रयोग से निर्धारित होता है; बौद्ध परम्परा प्रज्ञा और करुणा के समन्वय पर बल देती है, जबकि भारतीय शिक्षा-परम्परा में गुरु-शिष्य संबंध केवल सूचना के हस्तांतरण का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व-निर्माण की प्रक्रिया है (राधाकृष्णन, 1996; हिरियन्ना, 1998; भगवद्गीता, 2023)। इस प्रकार भारतीय शिक्षा-दृष्टि शिक्षा को मनुष्य के अंतःकरण के परिष्कार की प्रक्रिया के रूप में देखती है, न कि केवल बौद्धिक प्रशिक्षण के रूप में। यही कारण है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भारतीय शिक्षा-दृष्टि की प्रासंगिकता नए रूप में उभरती है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता ज्ञान तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाती है, तो शिक्षा का वास्तविक दायित्व ज्ञान और सूचना के मध्य, बुद्धि और प्रज्ञा के मध्य, कौशल और चरित्र के मध्य तथा तकनीकी दक्षता और नैतिक उत्तरदायित्व के मध्य संतुलन स्थापित करना होगा। इस संदर्भ में भारतीय शिक्षा-दृष्टि आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रतिरोध नहीं करती, बल्कि उसके मानवीय, नैतिक और शैक्षिक पुनर्संदर्भीकरण (recontextualization) का आग्रह करती है। वह यह स्मरण कराती है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य मशीनों को अधिक बुद्धिमान बनाना नहीं, बल्कि मनुष्य को अधिक विवेकशील, उत्तरदायी और लोकमंगलोन्मुख बनाना है।

प्रस्तुत आलेख इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा-दृष्टि और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अंतर्संबंधों का दार्शनिक एवं समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसका केंद्रीय प्रतिपादन यह है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा

की प्रक्रियाओं, विधियों और संसाधनों को रूपांतरित कर सकती है, किन्तु शिक्षा के मूल उद्देश्यों - प्रज्ञा, विवेक, चरित्र, आत्मानुशासन और लोकमंगल - का विकल्प नहीं बन सकती। अतः AI के युग में भारतीय शिक्षा-दृष्टि का पुनर्विवेचन केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि भविष्य की शिक्षा के लिए एक आवश्यक बौद्धिक और नैतिक आवश्यकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और समकालीन शिक्षा-विमर्श:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तीव्र विकास ने शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य और प्रक्रियाओं के संबंध में स्थापित धारणाओं को पुनर्विचार के लिए प्रेरित किया है। यदि औद्योगिक क्रांति ने शिक्षा को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाने की चुनौती प्रस्तुत की थी, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा के ज्ञानमीमांसीय (epistemological), नैतिक तथा मानवीय आधारों को पुनः प्रश्नांकित किया है। आज यह विमर्श केवल इस बात तक सीमित नहीं है कि AI शिक्षा में किस प्रकार उपयोगी हो सकती है, बल्कि इस मूल प्रश्न तक पहुँच चुका है कि ज्ञान, अधिगम और शिक्षण की पारंपरिक अवधारणाएँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव में किस प्रकार रूपांतरित हो रही हैं (यूनेस्को, 2021; रसेल एवं नॉरविग, 2021)। इसीलिए AI और शिक्षा का संबंध केवल तकनीकी नवाचार का विषय नहीं, बल्कि शिक्षा-दर्शन, ज्ञानमीमांसा और नैतिकता का भी विषय बन चुका है।

समकालीन शिक्षा-विमर्श में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के समर्थन में अनेक तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं। यह माना जाता है कि AI शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप अधिगम-सामग्री उपलब्ध करा सकती है, अधिगम की गति और शैली का विश्लेषण कर सकती है, त्वरित प्रतिपुष्टि (feedback) प्रदान कर सकती है तथा मूल्यांकन की प्रक्रियाओं को अधिक दक्ष बना सकती है। जनरेटिव AI ने शैक्षणिक लेखन, भाषा-अधिगम, प्रोग्रामिंग, शोध-सहायता और ज्ञान-संसाधनों तक पहुँच को भी अत्यंत सरल बना दिया है। इन कारणों से AI को शिक्षा में समावेशन, दक्षता और वैयक्तिक अधिगम के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन माना जा रहा है (डिग्नम, 2019; नीति आयोग, 2021)। यह स्वीकार करना होगा कि इन उपलब्धियों ने शिक्षा के लोकतंत्रीकरण और संसाधनों की उपलब्धता में उल्लेखनीय योगदान दिया है। किन्तु इन उपलब्धियों के साथ-साथ अनेक गंभीर प्रश्न भी उभरकर सामने आए हैं। यदि कोई शिक्षार्थी अधिकांश उत्तर कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्राप्त करने लगे, तो उसके स्वतंत्र चिंतन, विश्लेषणात्मक क्षमता और सृजनात्मकता पर क्या प्रभाव पड़ेगा? यदि लेखन, अनुवाद, समस्या-समाधान और शोध-सहायता का बड़ा भाग AI

द्वारा किया जाने लगे, तो शिक्षा में मौलिकता, बौद्धिक ईमानदारी और स्वाध्याय का स्थान किस प्रकार सुरक्षित रखा जाएगा? यही कारण है कि वर्तमान AI-विमर्श में शैक्षणिक सत्यनिष्ठा (academic integrity), बौद्धिक स्वायत्तता (intellectual autonomy), एल्गोरिद्मिक पूर्वाग्रह (algorithmic bias), डेटा-गोपनीयता (data privacy) तथा डिजिटल निर्भरता जैसे प्रश्न अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन गए हैं (बेंडर इत्यादि, 2021; ओ'नील, 2016; क्रॉफर्ड, 2021)। स्पष्ट है कि शिक्षा में AI का प्रश्न केवल सुविधा का प्रश्न नहीं, बल्कि शिक्षा के चरित्र का प्रश्न भी है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण परिवर्तन ज्ञान की प्रकृति से संबंधित है। परंपरागत शिक्षा में ज्ञान की प्राप्ति अध्ययन, मनन, संवाद और अनुभव की क्रमिक प्रक्रिया के माध्यम से होती थी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने इस प्रक्रिया को अत्यंत तीव्र और तात्कालिक बना दिया है। आज विशाल मात्रा में सूचना कुछ ही क्षणों में उपलब्ध हो जाती है। यह परिवर्तन निस्संदेह उपयोगी है, किन्तु इससे एक नई चुनौती भी उत्पन्न हुई है - **क्या सूचना की सहज उपलब्धता स्वतः ज्ञान के विकास में परिणत हो जाती है?** ज्ञान और सूचना के मध्य यह भेद समकालीन शिक्षा-विमर्श का केंद्रीय प्रश्न बन चुका है। सूचना तथ्य प्रदान करती है, जबकि ज्ञान उन तथ्यों का संदर्भ, अर्थ और सम्यक् बोध विकसित करता है। इसी प्रकार ज्ञान भी तब तक अधूरा रहता है जब तक वह विवेक और नैतिक उत्तरदायित्व से संबद्ध न हो। अतः AI सूचना के प्रवाह को तीव्र कर सकती है, किन्तु सूचना को प्रज्ञा में रूपांतरित करने की प्रक्रिया अभी भी मानवीय शिक्षा का ही क्षेत्र है। इसी संदर्भ में शिक्षक की भूमिका पर भी पुनर्विचार आवश्यक हो गया है। कुछ तकनीकी विमर्शों में यह आशंका व्यक्त की जाती है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता भविष्य में शिक्षक की अनेक पारंपरिक भूमिकाओं का स्थान ले सकती है। तथापि यह निष्कर्ष शिक्षा की प्रकृति को अत्यधिक संकुचित दृष्टि से देखने का परिणाम है। यदि शिक्षक को केवल सूचना प्रदान करने वाला माध्यम माना जाए, तो AI निश्चित रूप से उसकी अनेक भूमिकाओं का निर्वहन कर सकती है। किन्तु यदि शिक्षक को मार्गदर्शक, प्रेरक, नैतिक सहचर, संवादकर्ता और व्यक्तित्व-निर्माता के रूप में समझा जाए, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता उसकी भूमिका का विकल्प नहीं बन सकती। शिक्षा का संबंध केवल उत्तर देने से नहीं, बल्कि उचित प्रश्न पूछने की क्षमता विकसित करने से भी है; केवल सूचना उपलब्ध कराने से नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण निर्णय लेने की योग्यता उत्पन्न करने से भी है। यही वह क्षेत्र है जहाँ मानवीय शिक्षक की भूमिका अपरिहार्य बनी रहती है।

इन परिस्थितियों में यह स्पष्ट होता है कि समकालीन AI-विमर्श शिक्षा को मुख्यतः तकनीकी, मनोवैज्ञानिक और प्रशासनिक दृष्टियों से देखता है, जबकि शिक्षा के दार्शनिक और नैतिक आयाम अपेक्षाकृत कम विकसित दिखाई देते हैं। यही वह बौद्धिक रिक्ति है जहाँ भारतीय शिक्षा-दृष्टि एक महत्त्वपूर्ण संवाद स्थापित करती है। भारतीय परंपरा शिक्षा को केवल अधिगम की प्रक्रिया नहीं मानती, बल्कि मनुष्य के अंतःकरण, विवेक और चरित्र के विकास की साधना के रूप में देखती है। इसलिए AI के युग में भारतीय शिक्षा-दृष्टि का पुनर्विवेचन किसी सांस्कृतिक आग्रह का परिणाम नहीं, बल्कि शिक्षा के मूल प्रश्नों की पुनर्समीक्षा की आवश्यकता है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता यह बदल रही है कि **मनुष्य कैसे सीखता है**, तो भारतीय शिक्षा-दृष्टि यह प्रश्न उठाती है कि **मनुष्य को अंततः क्या बनना चाहिए**। यही प्रश्न इस आलेख के अगले विमर्श का आधार है।

भारतीय शिक्षा-दृष्टि का दार्शनिक आधार:

भारतीय शिक्षा-दृष्टि का मूलाधार इस धारणा पर आधारित है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि मनुष्य का समग्र रूपान्तरण है। भारतीय परम्परा में शिक्षा को कभी भी सूचना, कौशल अथवा व्यावसायिक दक्षता तक सीमित नहीं माना गया। यहाँ शिक्षा मनुष्य के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास की एक सतत प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से वह स्वयं को, समाज को और व्यापक विश्व-व्यवस्था को समझने का प्रयास करता है (राधाकृष्णन, 1996; हिरियन्ना, 1998)। इसीलिए भारतीय चिंतन में शिक्षा का मूल्य इस आधार पर नहीं आँका जाता कि शिक्षार्थी कितना जानता है, बल्कि इस आधार पर कि वह अपने ज्ञान का उपयोग किस प्रकार करता है और उसका व्यक्तित्व किस सीमा तक परिष्कृत हुआ है। भारतीय शिक्षा-दृष्टि में **'विद्या'** का अर्थ मात्र सूचना अथवा विषय-ज्ञान नहीं है। उपनिषदों में परा विद्या और अपरा विद्या का जो भेद प्रस्तुत किया गया है, वह भारतीय शिक्षा-दर्शन की मौलिक विशेषता को उद्घाटित करता है। अपरा विद्या मनुष्य को लौकिक जगत् के ज्ञान से परिचित कराती है, जबकि परा विद्या उसे आत्मबोध और सत्य की अनुभूति की ओर अग्रसर करती है (मुण्डकोपनिषद् 1.1.4-5)। इसका आशय यह नहीं कि लौकिक ज्ञान का अवमूल्यन किया गया है; बल्कि यह कि ज्ञान का अंतिम उद्देश्य केवल बाह्य जगत् की जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि मनुष्य के अंतःकरण का विकास भी है। इस दृष्टि से शिक्षा सूचना-संग्रह की प्रक्रिया न होकर आत्मपरिष्कार की साधना है।

यही कारण है कि भारतीय शिक्षा-दृष्टि में **ज्ञान और प्रज्ञा** के मध्य स्पष्ट भेद किया गया है। ज्ञान मनुष्य को तथ्यों, सिद्धान्तों और तर्कों से परिचित कराता है, जबकि प्रज्ञा उन तथ्यों के समुचित उपयोग का विवेक प्रदान करती है। ज्ञान से दक्षता प्राप्त होती है, परन्तु प्रज्ञा से दिशा प्राप्त होती है। ज्ञान साधन उपलब्ध कराता है, जबकि प्रज्ञा साध्य का निर्धारण करती है। यदि ज्ञान नैतिक विवेक से पृथक् हो जाए, तो वही ज्ञान शोषण, हिंसा अथवा विनाश का साधन भी बन सकता है। इसीलिए भारतीय दार्शनिक परम्परा में ज्ञान का मूल्य उसके नैतिक और लोकहितकारी प्रयोग से निर्धारित होता है (राधाकृष्णन, 2007; भगवद्गीता, 2023)। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में यह भेद अत्यन्त प्रासंगिक हो उठता है, क्योंकि AI विशाल मात्रा में सूचना का विश्लेषण कर सकती है, किन्तु सूचना का नैतिक मूल्यांकन और उसके लोकहितकारी उपयोग का निर्णय अभी भी मानवीय प्रज्ञा पर निर्भर करता है।

भारतीय शिक्षा-दृष्टि का एक अन्य मूलभूत तत्व **विवेक** है। भारतीय दर्शन में विवेक का आशय केवल तार्किक क्षमता से नहीं, बल्कि उचित और अनुचित, स्थायी और अस्थायी, साधन और साध्य, व्यक्तिगत हित और लोकहित के मध्य भेद करने की क्षमता से है। यही विवेक मनुष्य को उत्तरदायी निर्णय लेने योग्य बनाता है। यदि शिक्षा केवल विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास करे, परन्तु विवेक का नहीं, तो वह तकनीकी रूप से दक्ष किन्तु नैतिक रूप से रिक्त व्यक्तियों का निर्माण कर सकती है। समकालीन कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सबसे बड़ा प्रश्न भी यही है कि क्या निर्णय केवल उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर लिया जाना चाहिए, अथवा उसके सामाजिक, नैतिक और मानवीय परिणामों का भी विचार किया जाना चाहिए। भारतीय शिक्षा-दृष्टि का उत्तर स्पष्ट है कि निर्णय का अंतिम आधार विवेक होना चाहिए, क्योंकि तथ्य स्वयं नैतिक दिशा प्रदान नहीं करते।

भारतीय चिंतन शिक्षा को **चरित्र-निर्माण** से भी अभिन्न रूप से जोड़ता है। तैत्तिरीयोपनिषद् में गुरु द्वारा दी जाने वाली दीक्षान्त-शिक्षा - *"सत्यं वद, धर्मं चर"* - यह संकेत करती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक उत्कृष्टता नहीं, बल्कि नैतिक जीवन का निर्माण भी है (तैत्तिरीयोपनिषद्, 1.11.1)। यहाँ सत्य और धर्म का उल्लेख किसी धार्मिक अनुशासन के रूप में नहीं, बल्कि उत्तरदायी जीवन के आधार के रूप में किया गया है। इसी प्रकार भगवद्गीता में ज्ञान का मूल्य आत्मसंयम, समत्व और निष्काम कर्म के साथ जुड़ा हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय शिक्षा-दृष्टि में शिक्षा का वास्तविक परिणाम प्रमाणपत्र नहीं, बल्कि चरित्र है। यही कारण है कि भारतीय परम्परा में विद्वत्ता और सदाचार को परस्पर पूरक माना गया है।

भारतीय शिक्षा-दर्शन का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पक्ष **स्वाध्याय** है। स्वाध्याय का अर्थ केवल स्वपाठ नहीं, बल्कि निरन्तर आत्मचिन्तन, आत्मपरीक्षण और आत्मविकास है। ज्ञान का अर्जन तब तक अधूरा माना जाता है जब तक वह व्यक्ति के अनुभव, आचरण और व्यक्तित्व का अंग न बन जाए। आधुनिक शिक्षा में जहाँ बाह्य संसाधनों और तात्कालिक सूचना की उपलब्धता बढ़ती जा रही है, वहाँ स्वाध्याय की यह अवधारणा और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। यदि प्रत्येक प्रश्न का उत्तर कृत्रिम बुद्धिमत्ता तत्काल उपलब्ध करा दे, तो भी आत्मचिन्तन, आलोचनात्मक मनन और बौद्धिक आत्मनिर्भरता का स्थान कोई मशीन नहीं ले सकती। इस दृष्टि से स्वाध्याय शिक्षा को केवल ज्ञान-उपभोग (knowledge consumption) की प्रक्रिया न रहने देकर ज्ञान-आत्मसातीकरण (knowledge internalisation) की प्रक्रिया बनाता है।

इन सभी अवधारणाओं - विद्या, प्रज्ञा, विवेक, चरित्र और स्वाध्याय - का अंतिम लक्ष्य **लोकमंगल** है। भारतीय शिक्षा-दृष्टि में शिक्षित व्यक्ति केवल अपने व्यक्तिगत उत्थान के लिए उत्तरदायी नहीं होता; उससे अपेक्षा की जाती है कि उसका ज्ञान समाज, संस्कृति और मानवता के व्यापक कल्याण में भी योगदान दे। इसीलिए शिक्षा का मूल्यांकन केवल रोजगार, उत्पादकता अथवा आर्थिक सफलता के आधार पर नहीं किया गया, बल्कि इस आधार पर भी किया गया कि वह समाज को कितना अधिक न्यायपूर्ण, संवेदनशील और नैतिक बनाती है। यही व्यापक दृष्टि भारतीय शिक्षा-दर्शन को समकालीन कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विमर्श से जोड़ती है। यदि AI ज्ञान तक पहुँच का विस्तार करती है, तो भारतीय शिक्षा-दृष्टि यह सुनिश्चित करना चाहती है कि उस ज्ञान का उपयोग विवेक, उत्तरदायित्व और लोकमंगल की भावना के साथ किया जाए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भारतीय शिक्षा-दृष्टि की प्रासंगिकता:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास ने शिक्षा की पारम्परिक संरचनाओं को चुनौती देने के साथ-साथ उन्हें नए अवसर भी प्रदान किए हैं। आज ज्ञान तक पहुँच, अधिगम-सामग्री का निर्माण, भाषा-अनुवाद, वैयक्तिक अधिगम तथा शोध-सहायता जैसी अनेक प्रक्रियाएँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से अत्यंत सरल हो गई हैं। इस परिवर्तन ने शिक्षा की दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि की है, किन्तु साथ ही एक मूलभूत प्रश्न भी उपस्थित किया है - क्या शिक्षा का उद्देश्य भी उसी अनुपात में परिवर्तित हो गया है? यदि ज्ञान कुछ ही क्षणों में उपलब्ध हो सकता है, तो क्या शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञान-अर्जन तक सीमित रह जाता है? यही वह प्रश्न है जिसके आलोक में भारतीय शिक्षा-दृष्टि पुनः

प्रासंगिक हो उठती है। भारतीय परम्परा का आग्रह है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना का संचय नहीं, बल्कि मनुष्य के अन्तःकरण, विवेक, प्रज्ञा और चरित्र का विकास है। इस कारण कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में शिक्षा का पुनर्मूल्यांकन तकनीकी दृष्टि से अधिक दार्शनिक दृष्टि की अपेक्षा करता है।

सूचना बनाम ज्ञान:

समकालीन डिजिटल समाज में सूचना की उपलब्धता अभूतपूर्व है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने इस उपलब्धता को और अधिक तीव्र तथा व्यापक बना दिया है। आज किसी भी विषय पर विशाल मात्रा में सामग्री कुछ ही क्षणों में प्राप्त की जा सकती है। किन्तु सूचना की प्रचुरता अपने आप में ज्ञान का पर्याय नहीं है। सूचना तथ्य, आँकड़े अथवा विवरण प्रदान करती है, जबकि ज्ञान उन तथ्यों के मध्य संबंध स्थापित करने, उनका अर्थ समझने तथा उन्हें समुचित संदर्भ में रखने की क्षमता का नाम है। सूचना बाह्य है; ज्ञान उसका आत्मसात् किया हुआ रूप है। यही कारण है कि भारतीय शिक्षा-दृष्टि ज्ञान को केवल स्मृति अथवा सूचना-संग्रह से नहीं, बल्कि बौद्धिक परिपक्वता और अनुभवजन्य बोध से जोड़ती है (राधाकृष्णन, 1996; हिरियन्ना, 1998)। कृत्रिम बुद्धिमत्ता सूचना के प्रवाह को तीव्र बना सकती है, किन्तु सूचना को ज्ञान में रूपांतरित करने की प्रक्रिया अभी भी शिक्षार्थी की सक्रिय बौद्धिक सहभागिता पर निर्भर करती है।

ज्ञान के इस स्वरूप को भारतीय परम्परा में संवाद, मनन और निदिध्यासन की क्रमिक प्रक्रिया से जोड़ा गया है। उपनिषदों की शिक्षण-पद्धति में ज्ञान तत्काल प्राप्त होने वाली वस्तु नहीं, बल्कि निरन्तर चिंतन और आत्मानुभूति का परिणाम है। इसके विपरीत AI तत्काल उत्तर प्रदान करती है, परन्तु उत्तर की सत्यता, संदर्भ और सीमाओं पर विचार करना मनुष्य का दायित्व बना रहता है। इस प्रकार भारतीय शिक्षा-दृष्टि यह स्पष्ट करती है कि सूचना तक पहुँच जितनी सरल होती जाएगी, ज्ञान की आवश्यकता उतनी ही अधिक बढ़ेगी। शिक्षा का दायित्व भविष्य में सूचना उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि सूचना का सम्यक् अर्थ ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना होगा।

ज्ञान बनाम प्रज्ञा:

यदि सूचना और ज्ञान के मध्य अंतर शिक्षा का पहला दार्शनिक प्रश्न है, तो ज्ञान और प्रज्ञा के मध्य अंतर उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। भारतीय शिक्षा-दर्शन में प्रज्ञा ज्ञान की परिपक्व अवस्था है। ज्ञान मनुष्य को यह बताता है कि क्या संभव है; प्रज्ञा यह निर्धारित करती है कि क्या उचित है। ज्ञान साधनों का विस्तार करता है, जबकि प्रज्ञा

साधनों के नैतिक उपयोग की दिशा निर्धारित करती है। इसीलिए भारतीय परम्परा में प्रज्ञा का संबंध केवल बौद्धिक क्षमता से नहीं, बल्कि आत्मसंयम, नैतिक विवेक और लोकहित से भी जोड़ा गया है (धम्मपद, 2022; भगवद्गीता, 2023)। यही भेद कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। AI विशाल मात्रा में ज्ञान-सामग्री का विश्लेषण कर सकती है, जटिल समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकती है तथा निर्णय-निर्माण में सहायता भी कर सकती है। किन्तु वह यह निर्णय नहीं कर सकती कि उपलब्ध विकल्पों में नैतिक रूप से कौन-सा विकल्प अधिक उचित है। उदाहरणार्थ, कोई AI प्रणाली किसी विद्यार्थी के अधिगम-व्यवहार का अत्यंत सूक्ष्म विश्लेषण कर सकती है, किन्तु उस विश्लेषण का उपयोग किस सीमा तक किया जाना चाहिए, विद्यार्थियों की निजता और गरिमा की रक्षा कैसे की जाए, अथवा डेटा-संग्रह की नैतिक सीमाएँ क्या हों - ये प्रश्न प्रज्ञा के हैं, केवल ज्ञान के नहीं। इस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा में ज्ञान की उपलब्धता का विस्तार करती है, जबकि भारतीय शिक्षा-दृष्टि यह स्मरण कराती है कि ज्ञान का नैतिक नियमन प्रज्ञा के बिना संभव नहीं है।

बुद्धि बनाम विवेक:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास ने मानव-बुद्धि की अनेक क्षमताओं का अनुकरण संभव बना दिया है। विशाल आँकड़ों का विश्लेषण, जटिल प्रतिरूपों (patterns) की पहचान, त्वरित गणना तथा निर्णय-सहायक निष्कर्ष प्रस्तुत करने जैसी क्षमताओं में AI ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। परिणामस्वरूप अनेक बार यह धारणा बनने लगी है कि बुद्धि का अर्थ मुख्यतः सूचना के विश्लेषण और समस्या-समाधान की क्षमता है। भारतीय शिक्षा-दृष्टि इस धारणा का विस्तार करते हुए एक महत्त्वपूर्ण भेद प्रस्तुत करती है। भारतीय चिंतन में बुद्धि (बौद्धिक क्षमता) और विवेक (नैतिक एवं प्रज्ञात्मक निर्णय-क्षमता) समानार्थी नहीं हैं। बुद्धि तथ्य उपलब्ध कराती है; विवेक उन तथ्यों के नैतिक, सामाजिक और मानवीय अर्थ का निर्णय करता है। बुद्धि यह बता सकती है कि कौन-सा कार्य संभव है, किन्तु विवेक यह निर्धारित करता है कि कौन-सा कार्य उचित है (राधाकृष्णन, 1996; भगवद्गीता, 18.30-32)।

समकालीन शिक्षा के संदर्भ में यह भेद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। AI विद्यार्थियों को किसी प्रश्न का उत्तर, किसी शोध का सार, किसी सिद्धान्त की व्याख्या अथवा किसी जटिल समस्या का समाधान कुछ ही क्षणों में उपलब्ध करा सकती है। किन्तु उत्तर की वैधता, उसके सामाजिक प्रभाव, उसके नैतिक परिणाम तथा उसके उपयोग की उपयुक्तता का निर्णय अभी भी मानवीय विवेक पर निर्भर है। यदि शिक्षा केवल विश्लेषणात्मक दक्षता तक सीमित

रह जाए, तो वह ऐसे व्यक्तियों का निर्माण कर सकती है जो तकनीकी रूप से अत्यन्त सक्षम हों, किन्तु नैतिक दृष्टि से अनिश्चित और सामाजिक दृष्टि से असंवेदनशील हों। इसीलिए भारतीय शिक्षा-दृष्टि में विवेक को शिक्षा का अनिवार्य परिणाम माना गया है। विवेक मनुष्य को केवल ज्ञानवान नहीं, बल्कि उत्तरदायी बनाता है।

AI के युग में इस विवेक की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। जनरेटिव AI द्वारा निर्मित सामग्री प्रायः अत्यन्त विश्वसनीय प्रतीत होती है, जबकि उसमें तथ्यात्मक त्रुटियाँ, संदर्भगत असंगतियाँ अथवा सांस्कृतिक पूर्वाग्रह भी हो सकते हैं (बेंडर इत्यादि, 2021)। ऐसी स्थिति में शिक्षा का उद्देश्य उत्तरों की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि उत्तरों का समालोचनात्मक परीक्षण करने की क्षमता विकसित करना होना चाहिए। भारतीय शिक्षा-दृष्टि का विवेक-सिद्धान्त इसी आलोचनात्मक चेतना का विकास करता है। यह विद्यार्थियों को केवल सूचना ग्रहण करने के लिए नहीं, बल्कि उसके सत्य, औचित्य और परिणामों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए AI के युग में विवेक शिक्षा की सहायक अवधारणा नहीं, बल्कि उसका केंद्रीय उद्देश्य बन जाता है।

कौशल बनाम चरित्र:

समकालीन शिक्षा-विमर्श में कौशल की चर्चा अभूतपूर्व रूप से बढ़ी है। डिजिटल दक्षता, समस्या-समाधान, रचनात्मकता, संचार-कौशल तथा तकनीकी दक्षता को भविष्य की शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। निस्संदेह बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश में इन कौशलों का अत्यन्त महत्त्व है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी कौशल-विकास और बहुविषयी अधिगम पर विशेष बल देती है। तथापि भारतीय शिक्षा-दृष्टि यह स्पष्ट करती है कि कौशल शिक्षा का एक आवश्यक आयाम है, किन्तु उसका अंतिम उद्देश्य नहीं। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य चरित्र का निर्माण है, क्योंकि चरित्र ही यह सुनिश्चित करता है कि अर्जित कौशलों का उपयोग किस दिशा में किया जाएगा।

भारतीय परम्परा में चरित्र का अर्थ केवल नैतिक उपदेशों का पालन नहीं, बल्कि सत्यनिष्ठा, आत्मसंयम, उत्तरदायित्व, करुणा और लोकहित की भावना से युक्त व्यक्तित्व का विकास है। तैत्तिरीयोपनिषद् की दीक्षान्त-शिक्षा - *"सत्यं वद, धर्मं चर"* - इस तथ्य की पुष्टि करती है कि शिक्षा का समापन सूचना-सम्पन्नता के साथ नहीं, बल्कि उत्तरदायी जीवन की प्रेरणा के साथ होता है (तैत्तिरीयोपनिषद्, 1.11.1)। इसी प्रकार भगवद्गीता में ज्ञान की सार्थकता

उसके आचरणगत रूपान्तरण में निहित मानी गई है। इससे स्पष्ट है कि भारतीय शिक्षा-दृष्टि में चरित्र ज्ञान का परिशिष्ट नहीं, बल्कि उसका स्वाभाविक परिणाम है।

AI के युग में यह प्रश्न और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यदि कोई विद्यार्थी AI की सहायता से उत्कृष्ट उत्तर लिख सकता है, जटिल प्रोग्राम तैयार कर सकता है अथवा शोध-सामग्री एकत्र कर सकता है, तो भी यह आवश्यक नहीं कि उसमें शैक्षणिक ईमानदारी, बौद्धिक उत्तरदायित्व और नैतिक प्रतिबद्धता का विकास भी हुआ हो। यही कारण है कि वर्तमान समय में शैक्षणिक सत्यनिष्ठा का प्रश्न अत्यन्त गंभीर हो गया है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ऐसे स्नातकों का निर्माण नहीं हो सकता जो तकनीकी रूप से दक्ष हों; उसे ऐसे नागरिक भी तैयार करने होंगे जो सत्यनिष्ठ, उत्तरदायी और सामाजिक रूप से संवेदनशील हों। भारतीय शिक्षा-दृष्टि का चरित्र-निर्माण सम्बन्धी आग्रह इसी व्यापक मानवीय उद्देश्य की पुनर्पुष्टि करता है।

स्वचालन बनाम आत्मानुशासन:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक प्रमुख उद्देश्य मानवीय श्रम और निर्णय-प्रक्रियाओं का आंशिक या पूर्ण स्वचालन (Automation) है। शिक्षा में भी स्वचालित मूल्यांकन, स्वचालित प्रतिपुष्टि, सामग्री-निर्माण तथा अधिगम-प्रबंधन जैसी प्रक्रियाएँ निरन्तर विकसित हो रही हैं। इससे शिक्षण की दक्षता और गति में वृद्धि हुई है। किन्तु प्रत्येक स्वचालन अपने साथ एक नैतिक प्रश्न भी लेकर आता है - क्या सुविधा का विस्तार सदैव सीखने की गुणवत्ता में भी वृद्धि करता है? यदि प्रत्येक उत्तर तत्काल उपलब्ध हो जाए, तो धैर्य, मनन, स्वाध्याय और आत्मसंघर्ष जैसी अधिगम-प्रक्रियाओं का क्या होगा?

भारतीय शिक्षा-दृष्टि इस प्रश्न का उत्तर आत्मानुशासन की अवधारणा के माध्यम से देती है। भारतीय परम्परा में शिक्षा बाह्य अनुशासन का नहीं, बल्कि आत्मानुशासन का विकास करती है। स्वाध्याय, तप, संयम और निरन्तर अभ्यास को ज्ञानार्जन की आवश्यक शर्त माना गया है। इसका उद्देश्य शिक्षार्थी में ऐसी आन्तरिक प्रेरणा विकसित करना है जो उसे बाह्य नियंत्रण के अभाव में भी सत्य, श्रम और नैतिकता के मार्ग पर बनाए रखे। यही कारण है कि भारतीय शिक्षा-दर्शन में सीखना केवल परिणाम प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के क्रमिक परिष्कार की साधना है।

AI के युग में आत्मानुशासन का यह महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विवेकपूर्ण उपयोग तभी संभव है जब शिक्षार्थी स्वयं यह निर्धारित कर सके कि कहाँ AI की सहायता ग्रहण करनी है और कहाँ अपने स्वतंत्र चिंतन, अध्ययन और लेखन पर निर्भर रहना है। यदि यह निर्णय केवल बाह्य नियमों पर आधारित होगा, तो उनके अभाव में दुरुपयोग की संभावना बनी रहेगी। इसके विपरीत यदि शिक्षा आत्मानुशासन का विकास करती है, तो AI एक सहायक उपकरण के रूप में प्रयुक्त होगी, प्रतिस्थापन (substitution) के रूप में नहीं। इस प्रकार भारतीय शिक्षा-दृष्टि स्वचालन का विरोध नहीं करती; वह यह आग्रह करती है कि तकनीकी सुविधा मानवीय आत्मविकास का विकल्प न बन जाए।

इन पाँचों विमर्शों - सूचना और ज्ञान, ज्ञान और प्रज्ञा, बुद्धि और विवेक, कौशल और चरित्र तथा स्वचालन और आत्मानुशासन - से यह स्पष्ट होता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा की प्रक्रियाओं में व्यापक परिवर्तन ला सकती है, किन्तु शिक्षा के मूल उद्देश्य का निर्धारण अभी भी दार्शनिक और मानवीय आधारों पर ही होगा। भारतीय शिक्षा-दृष्टि का महत्त्व इसी तथ्य में निहित है कि वह शिक्षा को तकनीकी दक्षता की सीमा से आगे ले जाकर मनुष्य के समग्र विकास, नैतिक उत्तरदायित्व और लोकमंगल के साथ जोड़ती है। इसीलिए AI के युग में भारतीय शिक्षा-दृष्टि अतीत की विरासत भर नहीं, बल्कि भविष्य की शिक्षा के लिए एक जीवंत वैचारिक संसाधन के रूप में पुनः उभरती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता-सक्षम शिक्षा के लिए भारतीय शिक्षा-दृष्टि के निहितार्थ:

यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा के स्वरूप को पुनर्परिभाषित कर रही है, तो शिक्षा-दर्शन के समक्ष सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि इस परिवर्तन का मार्गदर्शन किन मूल्यों द्वारा किया जाएगा। तकनीकी विकास स्वयं मूल्य-निरपेक्ष नहीं होता; वह जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयुक्त होता है, उन्हीं के अनुरूप उसका सामाजिक प्रभाव निर्धारित होता है। इसलिए AI-सक्षम शिक्षा (AI-enabled Education) का वास्तविक प्रश्न केवल यह नहीं है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किस सीमा तक किया जाए, बल्कि यह भी है कि उसका उपयोग किस शैक्षिक दृष्टि, किस नैतिक आधार और किस मानवीय उद्देश्य के साथ किया जाए। भारतीय शिक्षा-दृष्टि इस प्रश्न का उत्तर शिक्षा को मानव-निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखकर देती है। इस दृष्टि से AI शिक्षा का साधन है, साध्य नहीं; सहयोगी है, प्रतिस्थापक नहीं; और तकनीकी क्षमता का विस्तार है, मानवीय चेतना का विकल्प नहीं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षा के उद्देश्य को समग्र विकास, नैतिकता, संवैधानिक मूल्यों, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा के पुनर्संपर्क से जोड़ती है (भारत सरकार, 2020)। यह दृष्टि भारतीय शिक्षा-दर्शन की मूल संवेदना के निकट है। यदि AI को शिक्षा में व्यापक रूप से सम्मिलित किया जाना है, तो उसका समावेशन केवल डिजिटल अवसंरचना या तकनीकी दक्षता तक सीमित नहीं रह सकता। इसके साथ यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि शिक्षार्थियों में विवेकपूर्ण निर्णय, नैतिक उत्तरदायित्व, सत्यनिष्ठा, सामाजिक संवेदनशीलता तथा स्वाध्याय की प्रवृत्ति समान रूप से विकसित हो। अन्यथा AI शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करने के स्थान पर केवल सूचना-निर्भरता और बौद्धिक पराश्रय (intellectual dependency) को बढ़ावा दे सकती है। इस संदर्भ में शिक्षक की भूमिका पुनर्परिभाषित होती है। AI अनेक नियमित शैक्षणिक कार्यों - जैसे सामग्री-निर्माण, अभ्यास-प्रश्न तैयार करना, भाषा-संपादन, प्रारम्भिक मूल्यांकन तथा अधिगम-सहायता - को सरल बना सकती है। परिणामस्वरूप शिक्षक की भूमिका सूचना-प्रदाता से आगे बढ़कर अधिगम-मार्गदर्शक, नैतिक सहचर, आलोचनात्मक संवादकर्ता तथा व्यक्तित्व-निर्माता के रूप में अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। भारतीय शिक्षा-दृष्टि में गुरु का स्थान इसी कारण विशिष्ट माना गया है कि वह केवल ज्ञान का संचार नहीं करता, बल्कि शिक्षार्थी के भीतर विवेक, आत्मविश्वास और जीवन-दृष्टि का विकास करता है। AI इस भूमिका को सहयोग दे सकती है, किन्तु उसका प्रतिस्थापन नहीं कर सकती।

AI-सक्षम शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या के पुनर्संरचन की आवश्यकता भी स्पष्ट रूप से अनुभव होती है। वर्तमान पाठ्यचर्याओं का एक बड़ा भाग तथ्य-स्मरण और सूचना-आधारित अधिगम पर केंद्रित रहा है। जब सूचना सहज उपलब्ध हो जाती है, तब शिक्षा का केंद्र भी बदलना आवश्यक है। भारतीय शिक्षा-दृष्टि इस परिवर्तन की दिशा सुझाती है। पाठ्यचर्या में आलोचनात्मक चिंतन, नैतिक तर्क या नैतिक निर्णय-विवेक (ethical reasoning), संवाद, चिंतन, स्वाध्याय, बहुविषयी दृष्टि तथा वास्तविक जीवन की समस्याओं पर आधारित अधिगम को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। शिक्षा का मूल्यांकन भी केवल उत्तरों की शुद्धता पर नहीं, बल्कि तर्क की गुणवत्ता, नैतिक संवेदनशीलता, मौलिक चिंतन तथा सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित होना चाहिए। यही परिवर्तन AI के युग में शिक्षा को अधिक अर्थपूर्ण बना सकता है।

अध्यापक-शिक्षा के क्षेत्र में भी भारतीय शिक्षा-दृष्टि अत्यंत महत्त्वपूर्ण संकेत प्रस्तुत करती है। भविष्य के शिक्षकों को केवल AI उपकरणों के उपयोग का प्रशिक्षण देना पर्याप्त नहीं होगा। उन्हें AI की सीमाओं, एल्गोरिद्मिक पूर्वाग्रह, डेटा-नैतिकता, शैक्षणिक सत्यनिष्ठा, डिजिटल नागरिकता तथा उत्तरदायी AI उपयोग के दार्शनिक और नैतिक आयामों से भी परिचित कराना आवश्यक होगा। यदि शिक्षक स्वयं AI का आलोचनात्मक और विवेकपूर्ण उपयोग नहीं कर पाएँगे, तो वे विद्यार्थियों में भी ऐसी क्षमता विकसित नहीं कर सकेंगे। इस प्रकार अध्यापक-शिक्षा में भारतीय शिक्षा-दृष्टि और AI Ethics का समन्वय भविष्य की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता के रूप में उभरता है।

भारतीय शिक्षा-दृष्टि का एक अन्य महत्त्वपूर्ण योगदान ज्ञान-बहुलता (knowledge plurality) की स्वीकृति है। वर्तमान AI प्रणालियाँ मुख्यतः उन्हीं भाषाओं, स्रोतों और ज्ञान-परम्पराओं पर आधारित हैं जिनका डिजिटल प्रतिनिधित्व अधिक है। इससे अनेक स्थानीय भाषाएँ, सांस्कृतिक परम्पराएँ तथा स्वदेशी ज्ञान-व्यवस्थाएँ अपेक्षाकृत कम प्रतिनिधित्व प्राप्त करती हैं। भारतीय ज्ञान-परम्परा के संरक्षण और संवर्धन की दृष्टि से यह आवश्यक है कि AI-सक्षम शिक्षा केवल वैश्विक डिजिटल सामग्री पर निर्भर न रहे, बल्कि भारतीय भाषाओं, शास्त्रीय ग्रन्थों, लोकज्ञान, पारम्परिक विज्ञान तथा क्षेत्रीय बौद्धिक परम्पराओं को भी समान महत्त्व प्रदान करे। यह केवल सांस्कृतिक संरक्षण का प्रश्न नहीं, बल्कि ज्ञानात्मक न्याय (epistemic justice) का भी प्रश्न है।

अंततः AI-सक्षम शिक्षा का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाना चाहिए कि वह किस प्रकार का मनुष्य और किस प्रकार का समाज निर्मित करती है। यदि शिक्षा का परिणाम केवल अधिक दक्ष, अधिक उत्पादक और अधिक प्रतिस्पर्धी व्यक्ति है, तो उसका उद्देश्य अधूरा रहेगा। भारतीय शिक्षा-दृष्टि शिक्षा के अंतिम प्रतिफल के रूप में ऐसे मनुष्य की कल्पना करती है जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ विवेकशील, चरित्रवान, करुणामय और लोकमंगल के प्रति उत्तरदायी हो। इसलिए AI-सक्षम शिक्षा की सफलता का वास्तविक मापदण्ड केवल तकनीकी नवाचार नहीं, बल्कि मानवीय परिष्कार होना चाहिए। इसी अर्थ में भारतीय शिक्षा-दृष्टि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अस्वीकार नहीं करती; वह उसे एक व्यापक मानवीय, नैतिक और शैक्षिक उद्देश्य के अधीन रखने का आग्रह करती है।

समालोचनात्मक विमर्श: भारतीय शिक्षा-दृष्टि और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का संवाद

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय शिक्षा-दृष्टि के मध्य संबंध को न तो तकनीकी प्रतिस्पर्धा के रूप में समझा जाना चाहिए और न ही परम्परा तथा आधुनिकता के द्वंद्व के रूप में। यह संबंध मूलतः दो भिन्न बौद्धिक दृष्टियों के संवाद का है। एक ओर कृत्रिम बुद्धिमत्ता सूचना-प्रसंस्करण, विश्लेषणात्मक दक्षता और स्वचालित निर्णय-प्रक्रियाओं की अभूतपूर्व संभावनाएँ प्रस्तुत करती है; दूसरी ओर भारतीय शिक्षा-दृष्टि शिक्षा को मनुष्य के नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया के रूप में देखती है। इसलिए इन दोनों की तुलना प्रतिस्थापन के आधार पर नहीं, बल्कि परस्पर पूरकता के आधार पर की जानी चाहिए।

समकालीन AI-विमर्श की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इसने शिक्षा को अधिक सुलभ, अधिक वैयक्तिक और अधिक संसाधन-संपन्न बनाया है। भाषा-अनुवाद, वैयक्तिक अधिगम, सहायक लेखन, अधिगम-विश्लेषिकी तथा विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थियों के लिए AI ने अनेक नई संभावनाएँ विकसित की हैं। इन उपलब्धियों की उपेक्षा न तो व्यावहारिक होगी और न ही शैक्षिक दृष्टि से उचित। भारतीय शिक्षा-दृष्टि का उद्देश्य भी ज्ञान को सीमित करना नहीं, बल्कि उसे अधिक सार्थक बनाना है। इसलिए AI का विरोध भारतीय शिक्षा-दर्शन की मूल भावना नहीं है; उसका आग्रह केवल इतना है कि तकनीकी साधनों का उपयोग मानवीय उद्देश्यों के अधीन होना चाहिए। इसके साथ ही यह स्वीकार करना भी आवश्यक है कि भारतीय शिक्षा-दृष्टि को समकालीन AI-विमर्श में लागू करना सरल नहीं है। विद्या, प्रज्ञा, विवेक, स्वाध्याय और लोकमंगल जैसी अवधारणाएँ मूलतः दार्शनिक और व्याख्यात्मक प्रकृति की हैं। उनका अर्थ सांस्कृतिक संदर्भ, जीवनानुभव और नैतिक चिंतन के साथ विकसित होता है। इसके विपरीत कृत्रिम बुद्धिमत्ता की कार्यप्रणाली औपचारिक नियमों, गणनात्मक प्रतिमानों और डेटा-आधारित निष्कर्षों पर आधारित होती है। इसलिए भारतीय शिक्षा-दृष्टि को प्रत्यक्ष रूप से किसी एल्गोरिद्मिक संरचना में रूपांतरित करने का प्रयास न तो सरल है और न ही आवश्यक। उसका वास्तविक योगदान कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तकनीकी विकास में नहीं, बल्कि उसके शैक्षिक और नैतिक उपयोग के लिए बौद्धिक दिशा प्रदान करने में है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न भारतीय शिक्षा-दृष्टि की बहुलतापूर्ण प्रकृति से जुड़ा हुआ है। भारतीय शिक्षा-परम्परा किसी एक दार्शनिक मत का परिणाम नहीं है, बल्कि वैदिक, उपनिषदिक, बौद्ध, जैन तथा अन्य अनेक बौद्धिक धाराओं के दीर्घ संवाद से विकसित हुई है। इसलिए भारतीय शिक्षा-दृष्टि को एकरूप या स्थिर अवधारणा

के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं होगा। इस अध्ययन में जिन अवधारणाओं - विद्या, प्रज्ञा, विवेक, चरित्र, स्वाध्याय और लोकमंगल - का विवेचन किया गया है, वे भारतीय शिक्षा-परम्परा के व्यापक साझा मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं; तथापि इनकी व्याख्या विभिन्न दार्शनिक परम्पराओं में भिन्न-भिन्न रूपों में मिलती है। भविष्य के अध्ययन इन विशिष्ट परम्पराओं के स्वतंत्र योगदान का अधिक विस्तृत विश्लेषण कर सकते हैं। समकालीन शिक्षा के संदर्भ में एक अन्य चुनौती कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर अत्यधिक निर्भरता की है। यदि शिक्षण, लेखन, मूल्यांकन और चिंतन की प्रक्रियाएँ अत्यधिक स्वचालित हो जाएँ, तो शिक्षार्थियों में बौद्धिक परिश्रम, आलोचनात्मक चिंतन तथा आत्मनिर्भर अध्ययन की प्रवृत्ति प्रभावित हो सकती है। दूसरी ओर यदि AI का पूर्ण निषेध किया जाए, तो शिक्षा बदलती प्रौद्योगिकीय वास्तविकताओं से कट जाएगी। अतः शिक्षा के समक्ष वास्तविक चुनौती AI को स्वीकार या अस्वीकार करने की नहीं, बल्कि उसके विवेकपूर्ण और उत्तरदायी उपयोग की है। भारतीय शिक्षा-दृष्टि इसी संतुलित दृष्टिकोण का समर्थन करती है। वह तकनीक को मानव-विकास का साधन मानती है, मानव-विकास का विकल्प नहीं।

इसी संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि भविष्य की शिक्षा में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ केवल सूचना-संपन्नता से निर्धारित नहीं होगा। जैसे-जैसे सूचना तक पहुँच सार्वभौमिक होती जाएगी, वैसे-वैसे वे मानवीय क्षमताएँ अधिक महत्त्वपूर्ण होती जाएँगी जिन्हें कृत्रिम बुद्धिमत्ता पूर्णतः प्रतिस्थापित नहीं कर सकती - जैसे नैतिक निर्णय, सहानुभूति, संवाद, रचनात्मक कल्पना, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मचिन्तन। भारतीय शिक्षा-दृष्टि का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान इन्हीं मानवीय आयामों के संरक्षण और संवर्धन में है। इसीलिए AI के युग में भारतीय शिक्षा-दृष्टि अतीत का स्मरण मात्र नहीं, बल्कि भविष्य की शिक्षा का एक प्रासंगिक बौद्धिक आधार बन सकती है।

निष्कर्ष : सूचना से प्रज्ञा की ओर

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा की प्रक्रियाओं, साधनों और संभावनाओं का अभूतपूर्व विस्तार किया है। ज्ञान तक पहुँच, अधिगम की वैयक्तिकता, शोध-सहायता और शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता के क्षेत्र में AI ने शिक्षा को नई दिशा प्रदान की है। तथापि इस अध्ययन का केंद्रीय प्रतिपादन यह है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य इन तकनीकी उपलब्धियों से कहीं अधिक व्यापक है। शिक्षा केवल सूचना का अर्जन नहीं, बल्कि मनुष्य में विवेक, प्रज्ञा, चरित्र, आत्मानुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास है। यही कारण है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा की प्रक्रिया को रूपांतरित कर सकती है, परन्तु शिक्षा के उद्देश्य का निर्धारण नहीं कर सकती।

भारतीय शिक्षा-दृष्टि इस संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण दार्शनिक आधार प्रस्तुत करती है। विद्या को आत्मविकास से, ज्ञान को प्रज्ञा से, बुद्धि को विवेक से, कौशल को चरित्र से तथा शिक्षा को लोकमंगल से जोड़ने वाली यह दृष्टि AI के युग में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए रखती है। इसका अर्थ तकनीकी प्रगति का विरोध नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि प्रौद्योगिकी मानव-विकास की सहायक बने, उसका प्रतिस्थापन न करे। इस प्रकार भारतीय शिक्षा-दृष्टि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ संघर्ष का नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण सहअस्तित्व का मार्ग प्रस्तुत करती है। समकालीन शिक्षा के समक्ष वास्तविक चुनौती कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करना नहीं, बल्कि उसका उत्तरदायी उपयोग करना है। AI जितनी तीव्र गति से सूचना और विश्लेषण की क्षमता का विस्तार कर रही है, उतनी ही तीव्रता से शिक्षा को भी अपने मानवीय और नैतिक उद्देश्यों की पुनर्पुष्टि करनी होगी। भविष्य का शिक्षित व्यक्ति वह नहीं होगा जो केवल अधिक जानकारी रखता हो, बल्कि वह होगा जो उपलब्ध जानकारी का न्यायपूर्ण, उत्तरदायी और लोकहितकारी उपयोग करना जानता हो। इस प्रकार भविष्य की शिक्षा का प्रश्न कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव-बुद्धि के मध्य प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय प्रज्ञा के मध्य संतुलन का है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा की नई संभावनाओं का उद्घाटन करती है, जबकि भारतीय शिक्षा-दृष्टि उन संभावनाओं को मानवीय दिशा प्रदान करती है। यदि AI शिक्षा को अधिक सक्षम बनाती है, तो भारतीय शिक्षा-दृष्टि उसे अधिक सार्थक बनाती है। भविष्य की शिक्षा के लिए दोनों का समन्वय तभी संभव होगा जब तकनीकी उत्कृष्टता के साथ नैतिक उत्तरदायित्व, ज्ञान के साथ विवेक, कौशल के साथ चरित्र तथा नवाचार के साथ लोकमंगल को समान महत्त्व दिया जाएगा। इसी अर्थ में AI के युग में भारतीय शिक्षा-दृष्टि का पुनर्विवेचन केवल अतीत की ओर लौटना नहीं, बल्कि भविष्य की शिक्षा को अधिक मानवीय, अधिक न्यायपूर्ण और अधिक प्रज्ञामूलक बनाने की एक आवश्यक बौद्धिक पहल है।

संदर्भ:

1. ओ'नील, कैथी. (2016). *वेपन्स ऑफ मैथ डिस्ट्रक्शन: हाउ बिग डेटा इन्क्रीज़ेज़ इनइक्वालिटी एंड थ्रेटन्स डेमोक्रेसी*. क्राउन.
2. कृष्णमूर्ति, जे. (2008). *एजुकेशन एंड द सिग्निफिकेंस ऑफ लाइफ*. हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया.
3. कोएकेलबर्ग, मार्क. (2020). *एआई एथिक्स*. एमआईटी प्रेस.

4. क्रॉफर्ड, केट. (2021). *एटलस ऑफ एआई: पावर, पॉलिटिक्स एंड द प्लैनेटरी कॉस्ट्स ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस*. येल यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. जोबिन, अन्ना, इएंका, मार्सेलो एवं वायेना, एफी. (2019). ए ग्लोबल लैंडस्केप ऑफ एआई एथिक्स गाइडलाइन्स. *नेचर मशीन इंटेलिजेंस, 1*(9), 389–399.
6. डिग्नम, वर्जीनिया. (2019). *रिस्पॉन्सिबल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: हाउ टू डेवलप एंड यूज़ एआई इन ए रिस्पॉन्सिबल वे*. स्प्रिंगर.
7. तत्त्वार्थसूत्र. (2019). *तत्त्वार्थसूत्र*. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ.
8. तैत्तिरीयोपनिषद्. (2023). *ईशादिनव उपनिषद्*. गोरखपुर: गीता प्रेस.
9. दासगुप्त, सुरेन्द्रनाथ. (1975). *ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी* (खण्ड 1). मोतीलाल बनारसीदास.
10. धम्मपद. (2022). *धम्मपद*. गोरखपुर: गीता प्रेस.
11. नीति आयोग. (2021). *रिस्पॉन्सिबल एआई फॉर ऑल: एन इम्प्लिमेंटेशन अप्रोच फॉर इंडिया*. नई दिल्ली: नीति आयोग.
12. फ्लोरिडी, लुसियानो एवं काउल्स, जोश. (2019). ए यूनिफाइड फ्रेमवर्क ऑफ फाइव प्रिंसिपल्स फॉर एआई इन सोसायटी. *हार्वर्ड डेटा साइंस रिव्यू, 1*(1).
13. फ्लोरिडी, लुसियानो. (2014). *द फोर्थ रिवोल्यूशन: हाउ द इन्फोस्फीयर इज़ रीशेपिंग ह्यूमन रियलिटी*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
14. बेंडर, एमिली एम., गेब्रू, टिमनिट, मैकमिलन-मेजर, एंजेलीना एवं शेल, मार्गरेट. (2021). ऑन द डेंजर्स ऑफ स्टोकास्टिक पैरट्स: कैन लैंग्वेज मॉडल्स बी टू बिग? *एफएसीसीटी '21: प्रोसीडिंग्स ऑफ द 2021 एसीएम कॉन्फ्रेन्स ऑन फेयरनेस, अकाउंटेबिलिटी एंड ट्रांसपेरेंसी*, 610–623.
15. बोस्ट्रॉम, निक. (2014). *सुपरइंटेलिजेंस: पाथ्स, डेंजर्स, स्ट्रैटेजीज़*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
16. भगवद्गीता. (2023). *भगवद्गीता*. गोरखपुर: गीता प्रेस.
17. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020*. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय.
18. मुण्डकोपनिषद्. (2023). *ईशादिनव उपनिषद्*. गोरखपुर: गीता प्रेस.
19. यूनेस्को. (2021). *रेकमेंडेशन ऑन द एथिक्स ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस*. पेरिस: यूनेस्को.
20. यूरोपियन कमीशन. (2019). *एथिक्स गाइडलाइन्स फॉर ट्रस्टवर्दी एआई*. ब्रसेल्स: यूरोपियन कमीशन.
21. रसेल, स्टुअर्ट एवं नॉरविग, पीटर. (2021). *आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: ए मॉडर्न अप्रोच* (चतुर्थ संस्करण). पियर्सन.
22. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (1996). *इंडियन फिलॉसफी* (खण्ड 1). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
23. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (2008). *द हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ*. हार्परकॉलिन्स इंडिया. (मूल कृति 1927).
24. हिरियन्ना, एम. (1998). *आउटलाइन्स ऑफ इंडियन फिलॉसफी*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.